CLASS : 10th (Secondary) **4268/4220**

Series : Sec-M/2019

Total No. of Printed Pages : **7**

MARKING INSTRUCTIONS AND MODEL ANSWERS

MUSIC HINDUSTANI (Instrumental-Percussion)

TABLA

(Academic/Open)

(Only for Fresh/Re-appear Candidates)

उप-परीक्षक मूल्यांकन निर्देशों का ध्यानपूर्वक अवलोकन करके उत्तर- पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें। यदि परीक्षार्थी ने प्रश्न पूर्ण व सही हल किया है तो उसके पूर्ण अंक दें।

General Instructions :

(i) *Examiners are advised to go through the general as well as specific instructions before taking up evaluation of the answer-books.*

(ii) *Instructions given in the marking scheme are to be followed strictly so that there may be uniformity in evaluation.*

(iii) *Mistakes in the answers are to be underlined or encircled.*

(iv) *Examiners need not hesitate in awarding full marks to the examinee if the answer/is/are absolutely correct.*

(v) *Examiners are requested to ensure that every answer is seriously and honestly gone through before it is awarded mark/s. It will ensure the authenticity as their evaluation and enhance the reputation of the Institution.*

(vi) *A question having parts is to be evaluated and awarded partwise.*

(vii) *If an examinee writes an acceptable answer which is not given in the marking scheme, he or she may be awarded marks only after consultation with the head-examiner.*

(viii) *If an examinee attempts an extra question, that answer deserving higher award should be retained and the other scored out.*

(ix) *Word limit wherever prescribed, if violated upto 10%. On both sides, may be ignored. If the violation exceeds 10%, 1 mark may be deducted.*

(x) *Head-examiners will approve the standard of marking of the examiners under them only after ensuring the non-violation of the instructions given in the marking scheme.*

(xi) Head-examiners and examiners are once again requested and advised to ensure the authenticity of their evaluation by going through the answers seriously, sincerely and honestly. The advice, if not headed to, will bring a bad name to them and the Institution.

महत्त्वपूर्ण निर्देश :

(i) अंक-योजना का उद्देश्य मूल्यांकन को अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ बनाना है। अंक-योजना में दिए गए उत्तर-बिन्दु अंतिम नहीं हैं। ये सुझावात्मक एवं सांकेतिक हैं। यदि परीक्षार्थी ने इनसे भिन्न, किन्तु उपयुक्त उत्तर दिए हैं, तो उसे उपयुक्त अंक दिए जाएँ।

(ii) शुद्ध, सार्थक एवं सटीक उत्तरों को यथायोग्य अधिमान दिए जाएँ।

(iii) परीक्षार्थी द्वारा अपेक्षा के अनुरूप सही उत्तर लिखने पर उसे पूर्णांक दिए जाएँ।

(iv) वर्तनीगत अशुद्धियों एवं विषयांतर की स्थिति में अधिक अंक देकर प्रोत्साहित न करें।

(v) भाषा-क्षमता एवं अभिव्यक्ति-कौशल पर ध्यान दिया जाए।

(vi) मुख्य-परीक्षकों/उप-परीक्षकों को उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करने के लिए केवल Marking Instructions/ Guidelines दी जा रही है, यदि मूल्यांकन निर्देश में किसी प्रकार की त्रुटि हो, प्रश्न का उत्तर स्पष्ट न हो, मूल्यांकन निर्देश में दिए गए उत्तर से अलग कोई और भी उत्तर सही हो, तो परीक्षक, मुख्य-परीक्षक से विचार-विमर्श करके उस प्रश्न का मूल्यांकन अपने विवेक अनुसार करें।

---

1. स्तर-ताल-लिपि पद्धति की विद्यार्थी अगर मुख्य Points Cover कर लेता है तो उसके उत्तर के अनुसार अंक दिए जाएँ।

भातखण्डे स्वरलिपि पद्धति

OR

विष्णु दिगम्बर स्वरलिपि पद्धति

कम से कम स्वरों के चिन्ह, सप्तकों के लिए चिन्ह, मात्राओं के लिए, उच्चारण बढ़ाने के लिए, सम, ताली, खाली, मींड, कण, स्वरों को दीर्घ करना, अक्षरों को दीर्घ करना इत्यादि। 5

2. दायाँ-लकड़ी, पूड़ी, गजरा, चाँटी, स्याही, लव, बद्धी, गुडरी, गट्टा इत्यादि। 2

OR

बायाँ – कूड़ी, पूड़ी, गोट, स्याही, मैदान, गजरा, गुडरी, बद्धी। 2

4 या 5 अंगों को भी विद्यार्थी बताता है। तो पूरे अंक दें।

3. किसी भी ताल प्रथम मात्रा से अन्तिम मात्रा तक के क्षेत्र को आवर्तन या आवृत्ति कहते हैं। प्रत्येक ताल की मात्राओं की संख्या भिन्न होती है तथा आवर्तन भी भिन्न-भिन्न मात्राओं के होते हैं, जैसे तीनताल की आवृत्ति 16 मात्राओं की है तो पहली मात्रा से 16वीं मात्रा तक एक आवर्तन हुआ फिर से पहली से 16वीं तक दूसरा आवर्तन हुआ। इस प्रकार इसे बार-बार दोहराने पर आवर्तनों की संख्या बढ़ती जाएगी। 2

4. तबला मिलाना अर्थात् दाहिने तबले को गायक के स्वर से वाद्य-यंत्र के स्वर से मिलाना होता है। दाहिने तबले को स्वर से मिलाने के लिए गट्टों की मुख्य भूमिका रहती है। ऊँचा स्तर करना है। तो गट्टे को हथौड़ी से नीचे खिसका दिया जाता है तथा स्वर नीचा करना हो तो गट्टे ऊपर किए जाते हैं। शेष adjustment गजरे से कर ली जाती है। स्वर में मिलाने के कारण दायाँ पर गट्टों का Role महत्त्वपूर्ण रहता है। 2

5. तबले या पखावज पर बजाने के लिए विभिन्न तालों की रचना की गई है। प्रत्येक ताल के वज़न के अनुकूल जो विभिन्न बोलों या वर्णों की सहायता से रचना की गई है, उसके शुद्ध रूप को ही ठेका कहते हैं। अतः किसी भी ताल की मात्राओं को तबले के वर्णों की सहायता से वाद्य पर बजाने योग्य बोल समूह को ही ठेका कहते हैं। 2

विद्यार्थी अपने शब्दों में भी अगर ठेका अर्थ समझा पाता है, उदाहरण देता है तो पूरे अंक दिए जा सकते हैं।

6. भरत द्वारा रचित 'नाट्यशास्त्र' ऐसा ग्रन्थ है जिसमें आधारभूत तत्त्वों पर प्रकाश डाला गया है। 1

7. ठेका यानि एकताल की मात्राएँ, चिन्ह, बोल विभाग इत्यादि सही हैं तो पूरे अंक दिए जाएँ। 1

8. पंडित शार्ङ्गदेव ने अपने ग्रन्थ 'संगीत रत्नाकर' में छठा अध्याय, (वाद्याध्याय) में समस्त वाद्यों को चार भागों में बाँटा है – तत्, सुषिर, अवनद, घन। 1

9. झपताल तथा सूलताल दस मात्राओं की तालें हैं। 1

विद्यार्थी कोई एक नाम लिख दे तो पूरा अंक दिया जाए।

10. 'संगीत रत्नाकर' सात अध्यायों में विभाजित है। 1

11. मैदान 1

12. 22 1